UGC Approved, Journal No. 48416 (IJCR), Impact Factor 2.314 ISSN : 2393-8358

Interdisciplinary Journal of Contemporary Research

An International Peer Reviewed Refereed Research Journal

Vol. 9, No. 4 April, 2022

PEER REVIEWED JOURNAL

EDITOR

Dr. H.L. Sharma
Associate Professor
Shimla, Himachal Pradesh

Dr. Hans Prabhakar Ravidas
Assistant Professor
Department of Performing Arts,
National Sanskrit University, Tirupati

Dr. Anil Kumar
Assistant Professor, Department of History
Rajdhani College, University of Delhi

Published by

VPO Nandpur, Tehsil-Jubbal, District-Shimla, Himachal Pradesh

email : ijcrournal971@gmail.com, Website : ijcrjournals.com

☞	मुगल वास्तु कला में धर्म : एक मूल्यांकन **डॉ0 परवेज आलम**	68-70
☞	Vivekananda's Re-Interpretation of Religion **Ashwin Parijat Anshu**	71-74
☞	प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति की वर्तमान समय में प्रासंगिकता **सुनीता यादव एवं डॉ0 वर्षा पालिवाल**	75-76
☞	महाकाव्यस्वरूपविमर्श: **डॉ0 सूर्य कान्त त्रिपाठी**	77-79
☞	आदि गुरु शंकराचार्य के वेदान्त दर्शन में शिक्षा का उद्देश्य : एक अध्ययन **दीनानाथ यादव**	80-82
☞	Haematology Related Changes and Semen Quality in Xenoestrogen Treated Men **Sunil Kumar & Dr. Anil Kumar Sinha**	83-90
☞	A Survey of Rise of OTT in Covid-19 amongst Youths in Patna (Bihar) **Naveen Kumar**	91-96
☞	فیض احمد فیض کی نظم نگاری ڈاکٹر بشریٰ بانو	97-102
☞	प्रारंभिक सिनेमा की अवधारणा **मनोज प्रसाद रजक**	103-105
☞	भारतीय संस्कृति एवं शिक्षा **डॉ0 राजदेव यादव एवं शैलेन्द्र कुमार यादव**	106
☞	Importance of Vocational Guidance in Career Selection **Dr. Roli Prakash**	107-111
☞	पंचायतीराज व्यवस्था में महिलाओं का नेतृत्व एवं राजनीतिक भूमिका **रूद्र प्रताप सिंह**	112-114
☞	पौराणिक आध्यात्म एवं दर्शन की वर्तमान में उपादेयता **डॉ0 ताराचन्द शर्मा**	115-120
☞	डोगरी नाटकें च रामतत्व **डॉ0 राधा देवी शर्मा**	121-124
☞	मसाच्चियो की कला यात्रा का संक्षिप्त अवलोकन **डॉ0 बलवन्त सिंह भदौरिया**	125-126
☞	आधी आबादी का सच **डॉ0 रजनी राय**	127-131
☞	Changes in the Post Mauryan Society in Northern India (c. 100 BCE – c. 1200 CE) **Dr. Ranjana Bhattacharya**	132-138
☞	भारतीय संगीत और विज्ञान **डॉ0 पामिल मोदी**	139-142

UGC Approved Journal No. 48416
Interdisciplinary Journal of Contemporary Research, Vol. 9, No. 4, April, 2022
Impact Factor: 2.314
ISSN: 2393-8358

प्रारंभिक सिनेमा की अवधारणा

मनोज प्रसाद रजक
शोधार्थी (पी. एच.डी.), हिंदी विभाग, प्रेसीडेंसी विश्वविद्यालय, कोलकाता

मानव सभ्यता के विकास में संचार की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है | संचार सार्वकालिक और सार्वभौमिक है | मानव सभ्यता के प्रारंभिक काल से ही संचार के विभिन्न रूपों और माध्यमों की जानकारी मिलती है | मानव विकास के साथ-साथ संचार के रूपों, प्रारुपों, साधनों, उपकरणों, माध्यमों, तरीकों आदि का भी विकास होता आया है | इसे ही माध्यम या मीडिया भी कहते हैं |

मीडिया का अर्थ 'मीडिया' अंग्रेजी शब्द 'मीडियम' का बहुवचन है, जिसका अर्थ होता है- 'माध्यम' | मीडिया का मुख्य उद्देश्य समुदाय को सूचित करना, शिक्षित करना और प्रेरित करना है ताकि नए विचारों और तकनीकों को स्वीकार किया जा सके और उनकी जीवन शैली में सुधार हो सके | मास मीडिया का उपयोग बड़े पैमाने पर संचार के चैनल के रूप में किया जाता है, जिससे कि विस्तृत क्षेत्र में सूचना का प्रसार किया जा सके | मीडिया में प्रत्येक विशाल और संकीर्ण माध्यम शामिल हैं-जैसे समाचार-पत्र, पत्रिकाएं, टीवी, रेडियो, सिनेमा, बिलबोर्ड, टेलीफोन, फैक्स और इंटरनेट |

सामान्यत: फिल्म से आशय श्रव्य और दृश्य माध्यम आधारित एक ऐसी तकनीकी व्यवस्था से है, जो एक विशाल जनसंख्या में सूचना और मनोरंजन के प्रसार की सुविधा का अवसर व क्षमता प्रदान करता है | तकनीक और उपकरण का प्रयोग यहाँ महत्त्वपूर्ण होता है | इनके उपयोगकर्ताओं की संख्या करोड़ों में है | प्रसिद्ध फिल्म निर्देशक जाहन बरुआ के मुताबिक "सिनेमा अन्य माध्यमों की तुलना में सबसे ताकतवर माध्यम है | हर व्यक्ति समाज और राजनीति से जुड़ा हुआ है |"[1]

फिल्म एक ऐसे कला माध्यम के रूप में हमारे सामने उपस्थित हैं, जिसमें अनेक कलाओं क़ा पड़ाव दिखाई देता है | भाषाई और रूपकर कलाएँ तो फिल्मों में हमेशा से ही अपना दखल रखती आयी हैं, परंतु साहित्यिक कृतियों के सिनेमाई रूपांतरण, सिनेमा में बोलियों और आंचलिकता की अनुगूँज, गीतों का निर्माण एवं प्रसार के लिए फिल्मों का महत्त्वपूर्ण अवदान माना जा सकता है | अभिनेत्री शबाना आजमी सिनेमा के सामाजिक स्वरूप को स्पष्ट कटी हुई कहती हैं- "सिनेमा का प्रसार आजकल इतने व्यापक रूप से हो गया है कि आज समाज पर जितना अधिक प्रभाव यह छोड़ता है उतना अन्य कोई कला-माध्यम नहीं | खासकर भारत जैसे देश के संदर्भ में तो यह और भी ज्यादा सही है | यहाँ साक्षरता का स्तर निम्न है | भारतीय लोग जितना अधिक सिनेमा से प्रभावित होते हैं | उतना अन्य किसी कला-माध्यम से नहीं |"[2]

सिनेमा अर्थात चलचित्र में एक स्थान से दुसरे स्थान तक चलते हुए चित्रों को दिखाया जाता है | ये चित्र परदे पर गति करते है, इसलिए इसे चित्रपट भी कहते हैं| आज सिनेमा के वर्तमान रूप पर जब हम नज़र डालते हैं तो पता चलता है कि उसकी पृष्ठभूमि में रंगमंच, नाटक आदि का विशेष योगदान है | सिनेमा के विकास के संबंध में डॉ. महेंद्र मित्तल ने अपनी पुस्तक 'भारतीय चलचित्र' में लिखा है "भले ही किसी पूर्वाग्रहों के कारण अथवा साहित्य- शास्त्र की बंधी हुई परिपाटी के कारण चित्रपट को किसी साहित्यिक विधा अथवा कला का स्तर प्रदान न किया गया हो, किन्तु आज इस तथ्य से विमुख नहीं हुआ जा सकता है कि समाजिक क्षेत्र में सिनेमा ने अपना एक निजी सांस्कृतिक परिवेश धारण कर लिया है और इसी परिवेश में साहित्य एवं कला के विभिन्न अलंकारों की जगमगाहट लक्षित की जा सकती है |"[3] अर्थात् सिनेमा, साहित्यिक नाटक के विकास की परिणति है | यह सिनेमा के विकास में महत्त्वपूर्ण कारक है | लेकिन वर्तमान में सिनेमा के विकास